देव संस्कृति विश्वविद्यालय

www.dsvv.acin

गीतामृतं

शारदीय नवरात्र

21 से 29 सितम्बर 2017

अधिभूतं च किं ?

"अधिभूतं क्षरो भावः"

अक्षर ब्रह्म योग

अधिभूत ब्रह्म अधिदैव
कर्म अध्यात्म अधियज्ञ
अधिभूत अन्त में भगवान
अधियज्ञ अधिदैव कर्म
अन्त में भगवान ब्रह्म
अध्यात्म अधियज्ञ
अन्त में भगवान ब्रह्म
अध्यात्म अधिभूत कर्म
अधिदैव अधियज्ञ

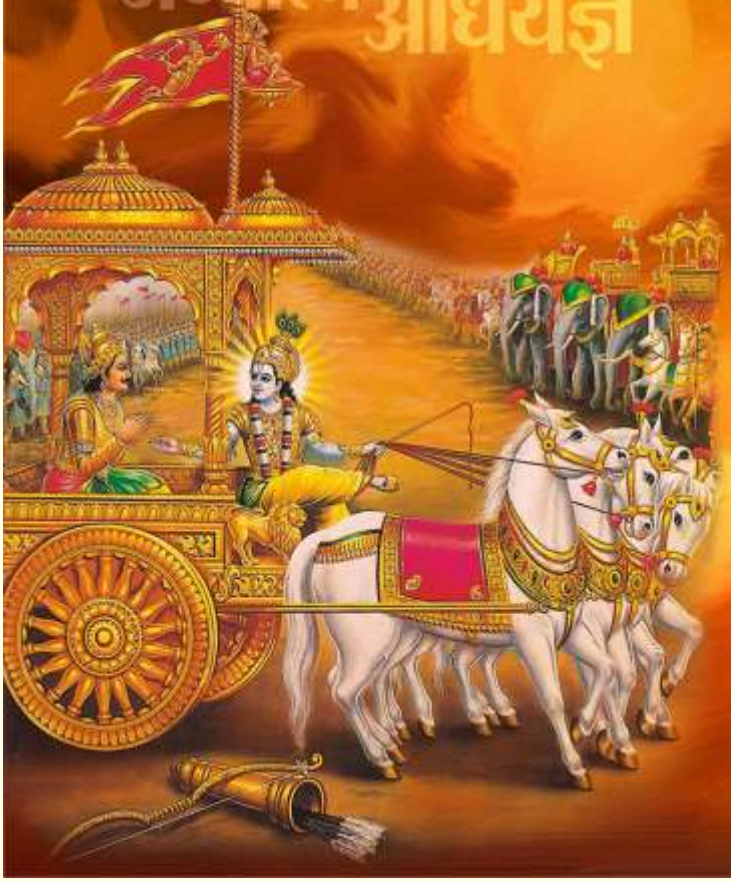

नवरात्रि पंचम दिवस

25/09/2017

विशेष उद्बोधन-

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

कुलाधिपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विषय - अक्षर ब्रम्ह योग। (8वां अध्याय - श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन के पूछे सात प्रश्नों के उत्तर)

नवरात्र पंचम दिवस: चतुर्थ प्रश्न - अधिभूतं च किं ? , उत्तर - "अधिभूतं क्षरो भावः"। (गीता 8/1 , 8/4)

- **चतुर्थ प्रश्न - अधिभूतं च किं ?**
- आज नवरात्रि की विशेष कक्षा का पांचवा दिन है चौथा प्रश्न है आज
- **अधिभूतं च किं ? अधिभूत क्या होता है अर्जुन के इस प्रश्न की व्याख्या में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं - अधिभूतं क्षरो भावः।**
- **जहाँ भाव क्षरित हो जाते वो अधिभूत है।**
- हमारा मन कनफ्यूजन में रहता है और इस कंफ्यूजन से निकालती है हमें मातृशक्ति।
- **गीत - घने अंधेरे में हम घिरे हैं, दिखाओ सतपथ हे वेदमाता...।**

विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नोत्तरी –

- **ऊर्जा को न तो नष्ट किया जा सकता है ना ही आत्मा को। क्या आत्मा और ऊर्जा की तुलना की जा सकती है?** नहीं। आत्मा जीवंत तत्व है और परमात्मा से जुड़ा हुआ है। उर्जा जो है वह फिजिकल अंश है।
- **क्या बुद्धि का होना गलत है? क्योंकि बुद्धि के कारण ही सारी समस्याएं हैं।** - देखो! बुद्धि के कारण समस्या नहीं है समस्या है दुर्बुद्धि के कारण। तर्क बुद्धि के कारण, हर चीज में हम तर्क लगाते हैं इस वजह से समस्या है। बुद्धि से हमें ध्यान लगाने का तरीका प्राप्त होता है, बुद्धि से हमें ध्यान को कैसे गहराई तक ले जाएं यह प्यह जानकारी मिलती है और हृदय से हमें ध्यान प्राप्त होता है। बुद्धि के बिना हम परमात्मा को समझ ही नहीं सकते इसलिए हृदय भी जरूरी है, बुद्धि भी जरूरी है, अंतकरण भी जरूरी है, भाव संवेदना भी जरूरी है और बौद्धिक क्षमता भी जरुरी है। बुद्धि हमें सही मार्ग चयन करना सिखाती है। इसीलिए तो गायत्री मंत्र के माध्यम से हम बुद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं सद्बुद्धि के लिए।
- **विद्यार्थी होकर जीवन में गुरु जी का काम कैसे कर सकते हैं?** - गुरुदेव के विचारों को घर-घर पहुंचा कर। गुरुदेव के विचारों को पहले अपने अंतःकरण के अंदर तक उसके बाद अपने परिवार में, अपने दोस्तों में और उन विचारों पर अमल कर सकते। गुरुदेव की बहुत सारी योजना है शत सूत्रीय योजना है उसको क्रियान्वित करो।
- **परम अक्षर ब्रम्ह है तो क्या वह अक्षर ॐ है?** - हां वह भी हो सकता है इसके अलावा और भी कोई अक्षर हो सकता है। क्षर यानि जो नष्ट हो जाए अक्षर यानि जो नष्ट ना हो।
- **अच्छा व्यवहार करने पर भी बुरा प्रतिभाव मिले तो क्या करना चाहिए?** - Continuous, Continuous ... कितना भी बुरा प्रतिभाव मिले कंटिन्यू अपने व्यवहार में रहो। भगवान बुद्ध ने आनंद से कहा कि जाओ, तुम जाओ और लोगों की सेवा करो तो आनंद बोले अगर सेवा करने के बदले में वह गाली देंगे तो तो बुद्ध जी बोले तो भी हम सेवा करेंगे, अगर कोई मारे-डाँटें तो भी हम सेवा करेंगे। हमें किसी से डरने की जरूरत नहीं है। हमें अच्छे काम करने में किसी प्रकार के भय की जरूरत नहीं है।
- हम जो चाहते हैं उसके लिए यदि हमारा इमैजिनेशन पॉजिटिव होता जाएगा तो जो भी हम जा रहे हैं वह पॉजिटिव ही होगा।
- **ईश्वर की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता तब क्यों सारे संसार में गलत काम हो रहे हैं?** - शुभ और अशुभ गलत और सही दोनों चीज संसार में विद्यमान है। भगवान ने दोनों चीज बनाई है। सुर और असुर दोनों संसार में हैं। दैवीय सत्ता भी है और आसुरी सत्ता भी है। गीता का 16 वां अध्याय दैवीय संपदा और आसुरी संपदा पूरा उसी के ऊपर है यह इसलिए है ताकि दैवीय सत्ता सतत सक्रिय रहे आसुरी सत्ता से और आसुरी सत्ता के बारे में हमें जानकारी होना चाहिए कि ऐसे भी लोग होते हैं। ईश्वर ने दोनों को प्रोड्यूस किया है और प्रोड्यूस करने के बाद में परीक्षा ले रहे हैं हमारी।

विषय वस्तु सार-

- **नवरात्र तृतीय दिवस - आज की देवी है स्कंदमाता।।**

भगवान शिव के वीर्य और मां पार्वती के रज के मिश्रण से एक जीव जन्म लेता है ये हैं भगवान कार्तिकेय(स्कंद) इनका जन्म लेना जरूरी था क्योंकि ताड़कासुर ने वर मांग लिया था कि मुझे भगवान शिव का पुत्र ही मारे और कोई नहीं। माता का पांचवा रूप है स्कंदमाता, स्कंद की मां है आज के दिन देवी को मातृ रूप में हम देखते हैं भगवान शिव के पुत्र स्कंद का पालन पोषण करने वाली मां स्कंदमाता। आज देवी की मातृभाव की पूजा की जाती है। हमारे शरीर पिंडज है जो कि रज और वीर्य से मिलकर बना है। और जब यह योगज शरीर बनता है तो इस स्कंद माता के माध्यम से बनता है। पिंडज से योगज में परिवर्तन आज के दिन। पिंडज शरीर से योगज शरीर में परिवर्तन। पिंडज मतलब विभिन्न प्रकार के अवयवों से बना हुआ और योगज मतलब योग में शरीर। साधक का दूसरा जन्म होता है आज मानवीय चेतना में। सारे अणु रमाणुओं का एक रिप्लेसमेंट होता है। दक्षिण भारत में भगवान कार्तिकेय का बहुत नाम है। कार्तिकेय देवों के सेनापति है उनका वाहन मोर है। भगवान कार्तिकेय शिवजी के बड़े पुत्र हैं जिनका शरीर रज और वीर्य के अंश से जन्म लिया(सामान्य तरह से नहीं बल्कि सूक्ष्म जगत में सारी प्रक्रियाएं हुई) और भगवान गणेश हुए जो मां पार्वती के शरीर से जन्मे थे जो उनके दूसरे पुत्र थे।

- श्लोक-

  किं तद्ब्रह्म "किमध्यात्मं" किं पुरुषोत्तम।

  "अधिभूतं च किं" प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते॥

  भावार्थ- अर्जुन ने कहा- हे पुरुषोत्तम! वह ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभूत नाम से क्या कहा गया है और अधिदैव किसको कहते हैं॥1/1॥

  श्लोक -

  "अधिभूतं क्षरो भावः" पुरुषश्चाधिदैवतम्।

  अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर॥

  भावार्थ - उत्पत्ति-विनाश धर्म वाले सब पदार्थ अधिभूत हैं, हिरण्यमय पुरुष (जिसको शास्त्रों में सूत्रात्मा, हिरण्यगर्भ, प्रजापति, ब्रह्मा इत्यादि नामों से कहा गया है) अधिदैव है और हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन! इस शरीर में मैं वासुदेव ही अन्तर्यामी रूप से अधियज्ञ हूँ॥8/4॥

- **आज हम बात कर रहे हैं - अधिभूतं क्षरो भावः।**
- भगवान कहते हैं अधिभूत वह है जिसका क्षरण हो सके, जो मिट सके। क्षरण मतलब Erosion। जैसे लोहा पानी में पड़े रहे तो धीरे-धीरे एरोस होते चले जाएगी।
- Erosion किसी भी धातु को, किसी भी चीज को, आत्म सत्ता को भी हो Erosion हो सकता है।
- जो मिट सके जिसका विनाश हो सके अधिभूत वह है।
- अर्जुन कृष्ण से प्रश्न पूछते हैं किं तत् ब्रम्ह? भगवान कहते हैं ब्रम्ह वह है जिसका क्षरण ना हो अक्षरं परम ब्रम्ह। और जब अधिभूत की बात आती है तो भगवान कहते हैं अधिभूतं क्षरो भावः , जिसका क्षरण हो सके।
- **भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः**। कल कहा था जो प्राणियों के अंदर भावों को उत्पन्न करके, भाव का त्याग करे वह कर्म है। हमारे अंदर किसी प्रकार की लिप्सा नहीं आनी चाहिए कि हमने ये कर्म किया। कर्म से आसक्ति का छूटना शुद्ध कर्म।

- प्राणियों के अंदर जो आधार होता है, अधि यानि आधार। सारे भूत, सारे प्राणी जिस आधार पर विद्यमान है जैसे कि जीवात्माएं हैं वह सब के सब शरीर को आधार बनाकर काम कर रही हैं। शरीर कैसे बनता है? - पंचमहाभूतों से बनता है। क्षिति जल पावक गगन समीरा।
- भूत शब्द का प्रयोग कई अर्थ हमें करते हैं। एक भूत मतलब प्राणी। भूतानि बोलते है प्राणी को। दूसरा अर्थ है Past, अतीत। तीसरा अर्थ है पंचमहाभूत। भूत शब्द का उपयोग किया गया है यहां पर अधिभूत- जिस आधार पर प्राणी रहते हैं।
- प्रायः प्रायः विज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया गया है - Physical Science, Natural Science and Life Science (Physics, Chemistry, Math, Biology और जो भी विज्ञान हैं सब इसके अंतर्गत आ जाते है।)
- साइंस का कोई भी रुप में इनमें आ जाता है, विज्ञान की सारी छोटी-छोटी बातें इसके अंतर्गत आ जाती है।
- पदार्थ बनते हैं मिटते हैं रूप और आकार नित नए-नए होते हैं। जो बनता है वह मिटता भी है और जो नहीं बनता नहीं मिटता है।
- **कोई भी चीज जो बनाई जाती है उसका विनाश निश्चित है आज हो चाहे कल हो। विज्ञान का सिद्धांत है जो आज बना है वह कल जरुर मिटेगा।**
- जब बच्चा पैदा होता है तो उसी दिन से ही उसकी कोशिकाएं मरना शुरू हो जाती है पर कोशिकाओं के बनने की स्पीड इतनी फास्ट होती है कि मरने वाले का पता नहीं चलता लेकिन दिखती नहीं है।
- कोशिकाओं के मरने की तुलना में कोशिकाओं के बनने की संख्या ज्यादा होती है। क्षरण जन्म से चालू हो जाता है और अंतिम समय तक चलता रहता है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होते जाता है युवा होता जाता है फिर अंत में जितनी कोशिकाएं मिटती है और जब उससे कम कोशिकाएं बनाने लगती है तो बुढ़ापा आ जाता है। त्वचा में झुर्रियां आने लगती है, बाल सफ़ेद होने लगते हैं। दिखाई पड़ता है कि Aging Process चल रही है। धीरे-धीरे सब क्षरण होने लगता है।
- Aging Process is a Natural Process. लेकिन आज वैज्ञानिक विज्ञान के कारण पीछे पड़े हैं वैज्ञानिक कि हम Aging को रोक के रहेंगे। तरह - तरह के इंक्रेक्शन्स लेने लगे हैं लोग युवा दिखने के लिए। जैसे आज के मॉर्डन अभिनेता। Problem ये है कि आदमी मरना नहीं चाहता, बूढ़ा नहीं होना चाहता।
- जीवन के बढ़ते-बढ़ते एक समय ऐसा आता है कि हमारी Body System भी Failure होने लगती है।
- **शरीर है तो क्षरण होगा ही होगा, पेड़-पौधे, वृक्ष-वनस्पति कोई भी सामान टेबल-कुर्सी, पहाड़ सब क्षरण होते रहते हैं। सूरज का भी ताप घट रहा है ऐसा वैज्ञानिक कहते हैं 1 दिन ठंडा भी हो जाएगा कई लाखों वर्षों के बाद। सबका क्षरण हो रहा है। निहारिकायें, आकाश-गंगा सब बनते मिटते रहते हैं।**
- क्षरो भावः - अधिभूत क्या है: क्षरण। क्षण-क्षण में क्षरण। जो क्षण-क्षण में क्षरण होता जाय वो आसपास का सत्य है। मिटता जरूर है पर धीरे-धीरे करके मिटता है। यह जीवन की सच्चाई है।
- **दो शब्द हैं हमारे दर्शन में जिसमें से एक है संसार। संसरति इति संसारः। सरकता रहता है, धीरे-धीरे बहता रहता है।**
- संसार सरक रहा है। सबका रूप मिट रहा है। दार्शनिक नीत्से से एक बात कही है - एक नदी में दुबारा नहीं उतर जा सकता क्यों? क्योंकि पानी आगे निकल जाता है, आगे बह जाता है। उसने कहा नहाने के बाद फिर से भी नहा लो तो भी नहीं नहा सकते उसी पानी में क्योंकि जिस जलधारा में आप उतरे थे वो आगे खिसक गई।
- **बुद्ध ने कहा क्षण-क्षण परिवर्तनशील है बुद्ध ने एक दर्शन दिया क्षणिकवाद का। उन्होंने कहा कि हर क्षण खत्म हो रहा है, इसे मत गँवाओ। मोक्ष के लिए प्रयास करो। अपने आपको भगवान के काम में लगाओ, करुणा का उपयोग करो। हम चीजों को पकड़ कर बैठे हैं, पकड़कर नहीं बैठ सकते परिवर्तन हो जाएगा कुछ क्षण में।**
- **Story -** Quantum Mechanics! Max Planck नाम के एक साइंटिस्ट थे जिसने Quantum Mechanics को जन्म दिया। Fritz of Capra (एक विख्यात वैज्ञानिक physicist, Berkeley University California) एक घटना का उल्लेख करते हैं। उन्होंने एक किताब लिखी - Unconscious Wisdom और एक किताब लिखी Tao of Physics. उसमें एक वार्तालाप आया है Max Planck और Werner Heisenberg के बीच। यह दोनों भारत आए और भारत में इनकी मुलाकात रविंद्रनाथ टैगोर से

हुई। रविंद्रनाथ टैगोर जी उन दिनों में भारत के विभूति के रूप में परिचित हो चुके थे। गीतांजलि पुस्तक में उनको नोबेल प्राइज में मिला चुका था। तो उन्होंने पूछा कि गीता में एक शब्द आया है अधिभूत इसका अर्थ क्या होता है? अधिभूत, अधियज्ञ ये शब्द क्यों आये हैं? तो वे समझाते हैं उनको भागवत गीता पर इसी विषय में चर्चा हुई। इन्हीं बिंदुओं पर अपने ढंग से इंग्लिश में उनको समझाया। पदार्थ वह है जिसका टिक नहीं सकता। अधिभूत यानि पदार्थ वह है जिसका स्वरुप टिक नहीं सकता। सूक्ष्म रूप में भी मिटता है स्थूल रूप में भी मिटता है। दोनों रूपों में Micro में भी और Macro में भी। वह कहते हैं भगवान बुद्ध की बात की हर क्षण संसार सिमट रहा है।

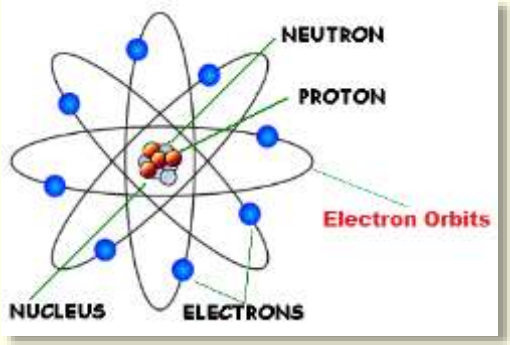

- **रदरफोर्ड वैज्ञानिक आये उन्होंने कहा पदार्थ विभाजित होता है। परमाणु संरचना का सिद्धांत दिया और उन्होंने कहा पदार्थ का सबसे छोटा कण परमाणु होता है। उन्होंने कहा परमाणु का भी विभाजन होता है प्रोटॉन न्यूट्रॉन में। डिवाइड होते-होते ऐसी स्थिति में आता है छोटे-छोटे कणों में बंट जाता है इलेक्ट्रॉन रूप में।**
- **क्षरण कभी रुकता नहीं है। पहाड़ भी एक दिन परमाणु बन जाएगा।**
- भगवान की सृष्टि बड़ी विचित्र है, आकाश गंगा में भी यही क्षरण चल रहा है निहारिकाओं में भी यही प्रक्रिया चल रही है। विज्ञान का मौलिक सूत्र है - अधिभूतं क्षरो भावः। आज का जो शब्द है अधिभूतं ये विज्ञान का शब्द है। ये क्षरो भाव है। Physical भी Chemistry में भी और प्राणियों में भी वनस्पतियों में भी सभी में है।
- धीरे- धीरे करके विज्ञान इतनी सूक्ष्मता पहुंच गया है कि विज्ञान में 20 तत्व और खोज लिए गए हैं। (Unification of Grand Forces - Collection of New Matters/Elements)
- Matter का कोई रूप, आकर नहीं है पर बुद्ध के दर्शन से प्रेरित, गीता के सूत्र से प्रेरित था Principle of Uncertainty (अनिश्चितता का सिद्धांत). Quantum Mechanics इसी पर आधारित है। पदार्थ था नहीं पदार्थ क्षर होते - होते उर्जा बन गया।
- भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं कि - जो जन्मा है वो मार जाएगा। क्यों मार जाएगा? तो क्षरण के कारण।
- श्लोक -

  जातस्त हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
  तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥
  भावार्थ - क्योंकि इस मान्यता के अनुसार जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इससे भी इस बिना उपाय वाले विषय में तू शोक करने योग्य नहीं है॥2/27॥
- हम जड़ता से चिपके रहते हैं हमारे अंदर आसक्ति भरी रहती है हम छोड़ना नहीं चाहते। हमारे तमाम तरह के रिश्तेदारी-नातेदारी इनसे इतनी ज्यादाआसक्ति है पर हमें मालूम नहीं होता कि हम एक दिन चले जाएंगे। जानते हैं तो भी अनजान बने हुए हैं।
- **हमारा काम क्या है कर्तव्य पालन। इसलिए भगवान श्री कृष्ण कहते हैं नष्ट हो जाएगा सब कुछ। मैं स्वयं अधिभूत के रूप में विद्यमान हूँ। मैं ही निर्माण करता हूं और मैं ही विनाश करता हूँ।**
- हमारे राजाओं-महाराजाओं ने बहुत बड़े-बड़े किले बनाये जो आज हवेली के रूप में काम में आ रहे हैं लोग आते हैं रुकते हैं। राजाओं के काम नहीं आये अंततक। कोई कहता है हम बंगला बना रहे हैं क्यों? अपने ego को पुष्ट करने के लिए। पर, एकदिन ये भी खत्म हो जाएगा।
- तुलसीदास जी कहते हैं कलयुग में पहचान कैसे होगी - गरीबों के घर नहीं होंगे झोपड़े बनेंगे और अमीरों के महंगे घर होंगे।
- महल भी टूटते हैं जो कभी बने थे, ये महंगे घर भी टूटेंगे। निर्माण टूटेगा जरूर एकदिन।
- **Story -** एक बार देवताओं के राजा इंद्र ने एक बड़ा महल बनाया। कोई नया घर बनाता है तो लोगों की ख्वाइश होती है कोई देखें उसकी सराहना करें। नारद जी पहुंच गए इंद्र के पास तो राजा इंद्र बोले महाराज अच्छा हुआ आप आ गए आप महल देखो मेरा। नारद जी ढाई घड़ी से ज्यादा नहीं रुकते कहीं भी, चल देते हैं क्योंकि उनको यक्ष का श्राप मिला हुआ है। नारद जी ने कहा

महल तो आपका बहुत अच्छा है लेकिन कितना अच्छा है ये हम कैसे बताएं। इंद्र- अच्छा कोई परखी है जो बात सकते कि कितना अच्छा बना है महल। नारद जी बोले तुम सुनने को तैयार हो। इंद्र- हां हम सुनेंगे महल अच्छा हो तो आलोचना कौन कर सकता है भला(आलोचना - अच्छा भी बोल सकता है, बुरा भी बोल सकता है)। नारद - लोमश ऋषि बड़े पुराने है उनको बुलाते हैं। उनको बहुत ज्ञान है उनकी आयु कितनी है कोई बता तो नहीं सकता फिर भी हम उनको बुलाते हैं। कई बार हम बुजुर्गों को बुलाते हैं बुजुर्गों को अनुभव ज्यादा है। तो लोमश ऋषि के पास गए उन्होंने कहा किसको लेकर आ गए नारद , तो बोले इंद्र को लेकर आया हूँ, बोले- कौन सा इंद्र? कई इंद्र तो हमारे सामने मर गए। देवताओं का समय ज्यादा होता है मनुष्यों से। पितृयान और देवायन दो पक्ष होते हैं इनके। हमारा एक साल मतलब उनके एक दिन के बराबर। इंद्र- लोमश ऋषि कैसे हैं हमसे कैसे पूछ रहे हैं? लोमश ऋषि का नाम इसलिए पड़ा लोम (रोम) की वजह से। पूरे शरीर में रोम(बाल, रुयें)। जब इनका एक रोम गिरता है तो एक ब्रम्हा मरता है। और न जाने उसबीच कितने इंद्र मर जाते हैं। अभी भी इनके बड़े-बड़े रुयें हैं जब ये खत्म हो जाएगा तब क्या होगा? तब ये शिव में विलीन हो जाएंगे। इंद्र - तो ये इतने दिन जिंदा रहेंगे। नारद - हां। इंद्र- बड़े अनुभवी हैं, इनको दिखाते हैं महल। नारद से इंद्र ने पूछा इनको इतने दिन रहना है तो क्या इनके लिए महल बना दें? नारद- बुजुर्गों की इज्जत करनी चाहिए महल बनाने की बात छोड़ो पहले इनको पूछो। लोमश ऋषि - इंद्र रहने दे अभी मेरी उम्र ही कितनी है, अभी तो मेरा एक ही रुआं टूटा है। जब तक पूरी शरीर के लिए रुयें नहीं टूटेंगे तब तक मैं नहीं मरूँगा। एक रुयें टूटते हैं तब तक कितने इंद्र मार जाते हैं इतने कम समय के लिए घर क्या बनाना? लोमश ऋषि के लिए समय बहुत छोटा और सिमटा हुआ है वह कह रहे हैं इतने कम समय के लिए घर क्या बनाना। उन्होंने कहा इंद्र तुम कौन हो? क्या कर लिया तुमने?, तुम नए-नए आए हो। अभी तुम्हारे पहले एक इंद्र था वो इसलिए आया था उससे पहले न जाने कितने इंद्र आये। ऋषि ने कहा सब हमारे सामने मरे हैं उसके बाद तुम आ गए। इंद्र अपने महल की चर्चा किये बिना भाग गया। ऋषि ने कहा जो बनाया है उसके विनाश को वो स्वीकार नहीं कर सकता।

- कोई भी संसार की विचित्रताओं को स्वीकार नहीं कर सकता। महल बनाता है बड़ी खुशी से बनाता है पर सोचता है लोग उसकी चर्चा करें। जबकि वह भी एक दिन नष्ट हो जाना है।
- **Story -** भारत के गायक हुए किशोर कुमार उन्होंने एक बड़ा घर बनवाया। और घर बनवाकर उसके बीच एक बड़ा सा ईंटों का खंभा लगवा दिया। जिसमें कोई प्लास्टर नहीं था, कोई पोलिश टाइल्स नहीं था। सामान्य वैसे ही था। घरों में जगह-जगह बढ़िया टाइल्स लगे हैं पर बीच में यह ईंटों का खंभा। लोग जाते थे घर में बात करते थे इतना आलीशान घर और बीच में यह ईंटों का खंभा क्यों? किशोर कुमार बोले यह तुम्हें सिखाने के लिए है किशोर कुमार आध्यात्मिक थे। बोले यह तुम्हें सिखाने के लिए है कि एक दिन मकान टूट जाएगा केवल यह खंडहर रह जाएगा। घर भी खंडहर हो जाएगा। क्षरण होगा पूरे मकान का।
- **हम चीजों को कितना भी सहेज कर रखें कितना भी बचा कर रखें उसका कारण होना निश्चित है। इस जीवन में दो ही चीजें हैं - क्षर और अक्षर। एक वो जिसका क्षरण हो रहा है और एक वो जिसका क्षरण नहीं हो रहा है।**
- **गीता में भगवान कृष्ण कर्म के संबंध में कहते हैं - ज्ञानी कौन है?- जो कर्म में अकर्म को देखता है। यानि कर्म घटित हो रहा है पर कर्म में प्रतिष्ठित न हो। कर्तापन का भाव न हो।**
- **क्षर में भी अक्षर है। परमात्मा कण-कण में विद्यमान है। पदार्थ सोया हुआ भगवान है। पदार्थों में सुप्त चेतना रूप में भगवान हैं। पदार्थों में भी चेतना है।**
- **Evolution कहता है पदार्थ में चेतना विकसित हुई। धीरे-धीरे विकासवाद आया। मन का विकास, प्राणों का विकास, मनुष्य का विकास।**

- भगवान कहते हैं कि क्षर में कहीं अक्षर छिपा पड़ा है। अधिभूत वो है जो नष्ट होता रहता है। पदार्थ वो है जो नष्ट होते रहता है पर पदार्थ में ऊर्जा छिपी है। ये विज्ञान आज कहने लगा है। पदार्थ पूर्णतः मरा नहीं है, पूर्णतः उर्जाविहीन नहीं है। इसलिए ऊर्जा को जब परिभाषित किया गया तो कहा गया - दो प्रकार की ऊर्जा होती है एक Potential Energy और एक Kinetic Energy.
- Potential Energy का मतलब है जो सुप्त है, सोई हुई है। और Kinetic Energy का मतलब है उर्जावान, जागृत, गतिशील।
- गहराई से सोचा जाए तो दो शब्द कहते हैं विज्ञान और अध्यात्म। विज्ञान- पदार्थ विज्ञान है और अध्यात्म- चेतना का ज्ञान/विज्ञान है।
- **आध्यात्मिक ज्ञान बड़ा विस्तार है। योग-दर्शन आदि आदि। अध्यात्म द्वारा जीवन के सत्य को जानने की कोशिश करते हैं। परंतु इसके बावजूद भी न जाने क्या क्या चीजें हैं - पैराफिसिक्स, मेटाफिजिक्स....। पदार्थ विज्ञान में कॉस्मिक फिज़िक्स है, बायो फिजिक्स है, कैमिस्ट्री है, जूलॉजी है, बॉटनी है लेकिन उस ज्ञान के मूल में है - अधिभूतं(अधिभूत) भगवान कहते हैं।**

- **पदार्थ और चेतना दोनों के मूल में अधिभूत है।**
- ज्ञानी और अज्ञानी में फर्क क्या है? - ज्ञानी जानता है क्या हो रहा है?(पदार्थ को मिट मानता है) और अज्ञानी हर चीज को अमित मानता है।
- अज्ञानी को रूप के जरा होने का भय होता है। रूपे जरा भयं (भर्तहरि)। कोई बूढ़ा नहीं होना चाहता। इससे अच्छा है Aging with Grace.
- आजतक जितने भी असुर हुए हैं रावण, हिरण्यकश्यप, त्रिपुरासुर, ताड़कासुर सबने कड़ी तपस्या की भगवान शिव को मनाया और वरदान मांगा कि भगवान में अमरता दे दिए। उन्होंने वरदान दिया पर अमरता का नहीं बल्कि नष्ट होने का, मरने के तरीके का अलग-अलग तरह से। (हिरण्यकश्यप) एक ने बुद्धि लगाई वरदान मांगा कि हम किसी प्राणी के हाथों न मरे तो भगवान ने उसे नरसिंह अवतार में मृत्यु दिया। उसी प्रकार अंततः सारे वरदान प्राप्त असुरों(रावण, ताड़कासुर आदि) का किसी न किसी तरीके से नाश हुआ। आजतक अमरता का वरदान किसी को नहीं मिला क्योंकि सृष्टि पंचमहाभूतों की है और इसका क्षरण होता ही है।
- **क्षर के आवरण में जो अक्षर है वह तो अमर रहेगा। ऋषियों ने इसीलिए बड़ी तपस्या की। तपस्या के बाद उन्होंने यह नहीं कहा कि हमारे शरीर अमर हो जाए बल्कि हमें उस अमृत तत्व का पता चल जाए, अमर तत्व का ज्ञान हो जाए उससे हम तदाकार हो जाएं। शरीर को अमर करने की जगह आत्म ज्ञान की ओर आगे बढ़े। किसी भी ऋषि ने यह वरदान नहीं मांगा कि हम अमर बनें उन्होंने कहा हमें आत्मज्ञान की ओर ले चलिए आत्मा के अनंत विस्तार को जाना है। अयमात्मा ब्रम्ह को जाना। तत्वमसि को जाना।**
- **प्रकृति के नियम परिवर्तित नहीं होते शास्वत होते हैं। अधिभूतं क्षरो भावः। अधिभूत वह जिसका क्षरण सुनिश्चित है। अगर यह मान लें तो अनासक्ति का भाव जागेगा।**
- गीता में एक सूत्र है अनासक्ति। शरीर से आसक्ति नहीं अनासक्ति। जीवन से आसक्ति मत रखो। किताब - अनासक्ति कर्मयोग किताब लिखी गांधी जी ने पहाड़ में रहकर कौसानी नामक जगह में।
- **प्रकृति में कुछ शाश्वत है तो वह है परिवर्तन। बदलाव आएगा जो आज है वह कल नहीं रहेगा, क्षण-क्षण में संसार बदलेगा।**
- हम राग और द्वेष दोनों के बीच अटक जाते हैं राग और द्वेष दोनों के साथ में अभिनिवेश चिपका हुआ है। राग, द्वेष और अभिनिवेश तीनों मिलकर हमें न जाने कितने जन्मों में बंधनों में फंसा देते हैं। इनसे हमें बचना है।
- **अविद्या यह है कि आप क्षर को अक्षर मान बैठे हो।**

- **अविद्या - क्षर को अक्षर मान लेना। अक्षर को भुलाकर क्षर से चिपकना। विद्या - अक्षर।**
- इसलिए भगवान कृष्ण कहते हैं अर्जुन से कि जो नहीं सोचना चाहिए तुम वह सोच रहे हो। यह जो सोच रहे हो कि पितामह हमेशा रहेंगे। आज नहीं तो कल मरेंगे।

  श्लोक -

  अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।

  गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः॥

  भावार्थ - श्री भगवान बोले, हे अर्जुन! तू न शोक करने योग्य मनुष्यों के लिए शोक करता है और पण्डितों के से वचनों को कहता है, परन्तु जिनके प्राण चले गए हैं, उनके लिए और जिनके प्राण नहीं गए हैं उनके लिए भी पण्डितजन शोक नहीं करते॥2/11॥
- अजुर्न ज्ञानियों की तरह सोचों। अपनी सोच का तरीका बदलो। इस संसार में दो ही तत्व है क्षर और अक्षर। हर चीज क्षर होगी। पदार्थ भी आत्मा भी सबकुछ। पर आत्मा क्षर होकर अगली यात्रा करने चले जाती है और नया जीवन ले लेती है अपना काम करती रहती है। पर पदार्थ हमेशा के लिए क्षर हो जाते है।
- जो क्षर हो रहा है उस सत्य को जानो। भगवान कहते हैं भीष्म में भी तो अक्षर तत्व है पर वह भी क्षर होगा। क्षर नष्ट हो जायेगा पर अक्षर बना रहेगा। अक्षर क्या है - इनकी आत्मा, इनका पुण्य कर्म।
- भगवान कृष्ण कहते हैं - अच्छे कर्म करोगे तो मुझको प्राप्त होगे।

  श्लोक -

  मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्।

  नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः॥

  भावार्थ - परम सिद्धि को प्राप्त महात्माजन मुझको प्राप्त होकर दुःखों के घर एवं क्षणभंगुर पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होते ॥8/15॥
- संसार दुःखों की नगरी है। (बुद्ध) - दुःख से मुक्ति के लिए क्षणिकवाद से मोक्ष तक का सिद्धांत।
- हम रोज मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं यदि हम रोज बोलें खुद से कि आज का दिन नया जन्म और आज की रात नई मौत।
- आपमें आपको संदेश देना हर दिन नया जन्म और हर रात नई मौत।
- **Be Born Again.**
- हमारे जीवन का सत्य जो है क्षर और अक्षर का मिलना है।
- क्षर मतलब विज्ञान, अक्षर मतलब अध्यात्म। हमारा जीवन विज्ञान और अध्यात्म का मिलन है। शरीर और आत्मा का मिलन है। पदार्थ और चेतना का मिलन है।
- **अगर हम ये जान लें कि तुम पदार्थ नहीं चेतना हो। देह नश्वर है और आत्मा अनश्वर है। आपमें मन को मित्र बन लें और जो भी शुभ है, करणीय है, सुकृत है, श्रेष्ठ है वह कर लें। ऐसा कर लें तो ज्ञान हो जाएगा कि संसार में दो ही तत्व है क्षर और अक्षर। और जहां तक विज्ञान का संसार है, परिवर्तन का संसार है वहां अधिभूत है। परिवर्तन को स्वीकार कर लें यही ज्ञान है। क्योंकि हर चीज क्षर है। परिवर्तन को जीवन में उतारने की कोशिश करेंगे।**
- **इति अधिभूतं क्षरो भावः।**

---------- ॐ शान्ति ----------